

सभी अहले इस्लाम को अस्सलामुअलैकुम!



ये खामोशी कब तक ?

हम मुसलमान कब तक चुप बैठे रहेंगे ? और जुल्म सहते रहेंगे ?

2002 में गुजरात के गोधरा में कई हज़ार मुसलमानों का खुले आम क़त्ल हुआ हम चुप रहे? 1983 में असम के नैली हत्याकांड में कई हज़ार मुसलमानों का क़त्ले आम हुआ हम चुप बैठे रहे? तीन तलाक़ वाला अल्लाह का क़ानून बदला गया हम चुप बैठे रहे? क़ानून बनाया गया समलैंगिक विवाह यानी लड़का लड़के से और लड़की लड़की से आपस में शादी कर सकते हैं जो क़ुरान और हदीस के खिलाफ़ है लेकिन हम चुप रहे? हमारी मस्जिदों से स्पीकर उतारे गए मगर हम चुप बैठे रहे? पहलू ख़ान के सभी हत्यारों को छोड़ दिया गया मगर हम चुप बैठे रहे? तबरेज़ अंसारी की मोब-लिंगिंग को कोर्ट ने भी मोब-लिंगिंग न माना हम चुप बैठे देखते रहे? आठ साल की आसिफ़ा बानो का तीन बार मन्दिर में रेप करके मार डाला मगर हम चुप रहे? पहलू ख़ान, अकबर ख़ान, अख़लाक़, वसीम अहमद, शौकत अली, असगर अली, नज़ाकत अली, तबरेज़ अंसारी, हाफ़िज़ जुनैद, हाफ़िज़ सलमान, हाफ़िज़ ख़ालिद, क़ारी उवैस वगैरह की मुसलमान होने की वजह से राम के नाम पर हत्या कर दी गई मगर हम चुप बैठे रहे? कश्मीर से कौन सी दुश्मनी निकाली कि उससे अनुच्छेद-370 हटाया मगर महाराष्ट्र, गुजरात, मणिपुर, असम, सिक्किम, मिजोरम, आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, गोवा से अनुच्छेद-371 न हटाया? मगर हम चुप रहे? सोशल मीडिया पर **#मुसलमानों_भारत_छोड़ो, #मुस्लिमों_का_सम्पूर्ण_बहिष्कार, #tag** वाली पोस्ट की गई मगर हम पढ़कर भी कुछ न कह सके? कमलेश तिवारी मारा गया और ग़ालियां हमारे नबी ﷺ को दी गई हम बुज़्जदिली से सुनते रहे और चुप रहे?

हम अभी भी चुप हैं क्यों?

राम के नाम पर मुसलमानों की हत्या हो रही है मगर हम चुप हैं? आज फिर असम में **NRC** लगाकर मुसलमानों का जीना दुश्वार कर दिया गया है मगर हम चुप हैं? **NRC** पूरे देश में लगने वाली है मगर हम चुप हैं? संसद में बिल पास किया गया (**Citizenship Amendment Bill-2019**) यानी विदेशी हिन्दू हमारा दुश्मन नहीं मुसलमान आतंकवादी है लेकिन हम चुप हैं, जानवर का मीट विदेश में तो एक्सपोर्ट हो सकता है मगर किसी मुसलमान को खाने की इजाज़त नहीं है मगर हम फिर भी चुप हैं? कुछ लोग बुर्के पर पाबंदी की मांग कर रहे हैं मगर हम चुप बैठे हैं? बच्चे पैदा करने पर पाबंदी लगाने की मांग हो रही है मगर हम चुप हैं? गांव, कस्बे, शहर, ज़िले वगैरह के इस्लामिक नाम बदल कर हिन्दू धर्म के नाम से जोड़ा जा रहा है लेकिन हम चुप हैं? हिन्दू राष्ट्र बनाने की मांग हो रही मगर हम चुप हैं? बाबर ने मस्जिद बनाई हमारे होते हुए टूटी और फिर छिनी मगर हम तमाशाई बने रहे? हमारी सभी बड़ी-बड़ी मस्जिदों को तोड़ कर मन्दिर बनाने की मांग हो रही है हम चुप हैं?

क्या अभी हमारे उठने का वक़्त नहीं आया है?

जब बच्चे पैदा करने पर पाबंदी लग जायेगी क्या हम तब उठेंगे? जब हमारी माँ, बहन, बेटी के बुर्के उतार दिए जायेंगे हम तब उठेंगे, क्या जब हर हिन्दुस्तानी मुसलमान को आतंकवादी कह कर फांसी के फंदे पर लटका दिया जाएगा हम तब जागेंगे? क्या जब हमारी सभी मस्जिदों को तोड़ कर मन्दिर बना दिया जाएगा हमारी तब आँखें खुलेंगी? जब मुसलमानों से बोलने की आज़ादी छीन ली जायेगी हमें तब होश आएगा? जब हमें दाढ़ी रखने, रोज़े रखने, नमाज़ पढ़ने से रोक दिया जायेगा तो क्या हम तब सोचेंगे उठने की? क्या जब मुसलमानों को मीट खाने से पूरी तरह रोक दिया जाएगा तब हम उठेंगे? जिस दिन **NRC** लगाकर मुसलमान को उसके वतन हिन्दुस्तान से निकाला जाएगा तब हम उठेंगे? जिस हिन्दुस्तान को बनाने में हमारे बुजुर्गों का खून शामिल है उसको हिन्दू राष्ट्र बना दिया जाएगा हम तब नींद से उठेंगे? जब नैली हत्याकांड की तरह हमें भी क़त्ल कर दिया जाएगा क्या हम तब उठेंगे? क्या जब मियांमार (बर्मा) की तरह हमारी माँ, बहन, बेटी का बलात्कार हमारी आँखों के सामने होगा हम तब उठेंगे।

मगर हम उठें कैसे हमारे पास तो वक़्त ही नहीं है ?

हम तो **Social Media- Whats App, Facebook, Twitter, Instagram, Likee, Tiktok, Youtube** वगैरह पर गन्दे-गन्दे मैसेज, शायरी भेजने और गन्दी-गन्दी वीडियो देखने और बनाने में व्यस्त हैं, हम तो होटलों पर बैठकर अपने मुसलमान भाई की चुगलखोरी करने और हॉट वीडियो देखने और मैच देखने और गाने सुनने में व्यस्त हैं, हम तो आपस में छोटी-छोटी बातों पर लड़ाई झगड़े करने में व्यस्त हैं, और आपस में नफरत, बुज़्ज़, हसद, जलन करने में व्यस्त हैं, हमारे पास तो नमाज़ पढ़ने का भी वक़्त नहीं है क्योंकि हम ज़्यादा से ज़्यादा दौलत कमाने और अच्छे से अच्छा खाने में व्यस्त हैं, और हम में से कुछ तो शराब पीने, ज़िना करने, चोरी करने, ग़ालियां देने और औरतों को तकने में व्यस्त हैं, और कुछ लोग तो अपने गिरेबानों में झांकने के बजाए दूसरों में और मस्जिदों के इमामों और मौअज़्ज़िनों में ख़ामियां ढूँढने में व्यस्त हैं, और हमारी औलाद को तो पहला कल्मा भी सही नहीं आता मगर हमारे पास वक़्त ही नहीं (اَبَتَات) पढ़ाने का क्योंकि हमारा बेटा **A B C D** पढ़ने में व्यस्त हैं।

दर्से क़ुरान अगर हमने न भुलाया होता

ये ज़माना न ज़माने ने दिखाया होता

सुनो मुसलमानों अपना मुस्तक़बिल अपनी आँखों के सामने बर्बाद होते हुए न देखो। उठो इससे पहले कि अपनी भी गर्दन पर छुरी आ जाए।

डॉ० नवाज़ ख़ान ने सच कहा है-

जलते घर को देखने वालों फूस का छप्पर आपका है

आग के पीछे तेज़ हवा है आगे मुक़द्दर आपका है।

उसके क़त्ल पे मैं भी चुप था मेरा नम्बर अब आया

मेरे क़त्ल पे आप भी चुप हैं अगला नम्बर आपका है।

उठो मेरे भाइयों, दोस्तों और बुजुर्गों उठो अपने दीन की हिफ़ाज़त करो और अपनी माँ, बहन, बेटी की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करो और छोड़ दो सारे बुरे काम और नेक बन जाओ और एक अहले सुन्नत व जमात हो जाओ और एक दूसरे को बुराई से रोको और अच्छाई का हुक्म दो और अपनी ज़ात के लिए किसी से न लड़ो और हुज़ूर ﷺ की इज़्ज़त पर पहरा दो क्योंकि- **नमाज़ दिन में पांच बार फ़र्ज़ है मगर नामूसे रिसालत (हुज़ूर ﷺ की इज़्ज़त) पर पहरा देना हर एक सांस पर फ़र्ज़ है।** इसलिए इस्लाम के खिलाफ कोई बात न सुनो और जो भी हुज़ूर ﷺ के या इस्लाम के या मुसलमानों के खिलाफ़ बात करे उससे जान और माल से लड़ो क्योंकि अल्लाह ने क़ुरान में फ़रमाया-

तर्जमा- तो उन्हें अल्लाह की राह में लड़ना चाहिए जो दुनिया की ज़िन्दगी बेचकर आख़िरत लेते हैं, और जो अल्लाह की राह में लड़े फिर मारा जाए या ग़ालिब आ जाए तो अनक़रीब हम उसे बड़ा सवाब देंगे। सूरह- निसा (74)

और फ़रमाया- और तुम्हें क्या हुआ कि न लड़ो अल्लाह की राह में और कमज़ोर मर्दों और औरतों और बच्चों के वास्ते जो यह दुआ कर रहे हैं कि ऐ रब हमारे हमें उस बस्ती से निकाल जिसके लोग ज़ालिम हैं और हमें अपने पास से कोई हिमायती दे दे और हमें अपने पास से कोई मददगार दे दे। सूरह- (निसा-75)

अपने मुसलमान भाई की आपस में मदद करो और मस्जिदें आबाद करो और नमाज़ी बन जाओ और अपने प्यारे नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ से अपनी जान और माल से ज़्यादा प्यार करो और अपने मुसलमान भाई को मुहब्बत की नज़र से देखो।

मुनव्वर साहब ने कहा था-

अब अगर एक न हो पाए तो मिट जाओगे

खुश्क पत्तों की तरह तुम भी सिमट जाओगे,

कुफ़्र दम तोड़ दे टूटी हुई शमशीर के साथ

तुम निकल जाओ अगर नारा-ए-तकबीर के साथ,

ख़ुद को पहचानों तो सब अब भी संवर सकता है

दुश्मने दीन का शिराज़ा बिखर सकता है।

मेरी गुज़ारिश है आप सभी मुसलमान भाइयों, बहनों, छोटों, बड़ों और बुजुर्गों से कि आप जैसे भी इस मुल्क हिन्दुस्तान में मुसलमानों पर हो रहे जुल्म को रोकने में अपना किरदार अदा कर सकते हैं खुदा के वास्ते ज़रूर करें। छोटों से मेरी गुज़ारिश है कि आप अपने बड़ों को समझाएं कि वो मुसलमानों के अधिकारों के लिए लड़ें और अपने अधिकार छीनें और उनका ये कहकर हौसला अफ़ज़ाई करें कि हम आपके साथ कांधे से कांधा मिलाकर खड़े हैं और बड़ों से मेरी गुज़ारिश है कि आप मुसलमानों के अधिकारों के लिए लड़ें। अल्लाह ने क़ुरान में फरमाया -

ऐ नबी! आप लोगों से फरमादो अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औरतें और तुम्हारे कुनबे वाले और तुम्हारी कमाई के माल और वो तिजारत जिसके नुक़सान का तुम्हें डर है और तुम्हारे पसंद के मकान ये चीज़ें अल्लाह और उसके रसूल और उसकी राह में लड़ने से ज़्यादा प्यारी हों तो तुम इंतज़ार करो के अल्लाह अपना अज़ाब ले आये। और अल्लाह नाफरमान लोगों को हिदायत नहीं देता। सुरह-तूबाह(24)

इसलिए आपसे गुज़ारिश है कि आप अपने दीन (इस्लाम) की हिफ़ाज़त के लिए लड़ें और परेशान और बदहाल मुसलमानों के हक़ के लिए लड़ें। अल्लाह आपको अच्छा सिला अता फरमाएगा।

डॉ० इक़बाल साहब ने कहा है-

फ़िज़ा-ए-बदर पैदा कर फ़रिश्ते तेरी नुसरत को,

निकल सकते हैं गर्दू से क़तार अंदर क़तार अब भी।

(यानी जंगे बदर जैसा माहौल पैदा कर बेशुमार फ़रिश्ते आज भी आसमान से तेरी मदद के लिए निकल आएंगे।)

और मैं अपनी क़ौम के उलामा व खुताबा से गुज़ारिश करता हूँ कि वो अपने बयानात में मुसलमानों पर हो रहे जुल्म को बयान करें और उम्मत मुस्लिमा में अपने नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ की नामूस (हुज़ूर ﷺ की इज़्ज़त) पर जान और माल से मर मिटने का ज़ब्बा पैदा करें।

अल्लाह ने क़ुरान में फरमाया- **ऐ ईमान वालों अगर तुम खुदा के दीन की मदद करोगे अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम जमा देगा। सूरह-मुहम्मद(7)**

डॉ० इक़बाल साहब ने कहा है-

जवानों को सोज़े ज़िगर बख़्श दे

मेरा इश्क़ मेरी नज़र बख़्श दे।

अल्लाह हम सब को इस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फरमाए और जिन लोगों ने इस पोस्टर में जिस तरह भी मदद की अल्लाह उनको जज़ाए ख़ैर अता फरमाए -आमीन।

आप सभी से गुज़ारिश है कि हुज़ूर ﷺ के सदक़े इसको ज़्यादा से ज़्यादा आगे बढ़ाएं और सोशल मीडिया पर शेयर करें।

अल्लाह आपको भी जज़ाये ख़ैर अता फरमाए। खुदा हाफ़िज़